# भक्ति से ज्ञान तक का सफर

● ब्रह्माकुमारी विजया, वरणगाव (महाराष्ट्र)

धार्मिक पृष्ठभूमि वाले परिवार में जन्म होने के कारण बाल्यकाल से ही मैं भक्ति की ओर उन्मुख हुई। धार्मिक-आध्यात्मिक पुस्तकों का खूब अध्ययन किया और भगवान को पाने की तड़प में मास-मास भर के उपवास किए परन्तु न भगवान मिले, न मन को शान्ति मिली। इसके बाद गीता का अध्ययन किया पर मन में प्रश्न उठता था कि भगवान ने एक अर्जुन को ही गीता क्यों सुनाई, हमें क्यों नहीं सुनाई? फिर भक्ति से वैराग्य आने लगा और मैं सद्गति के लिए गुरु खोजने लगी पर मन के अनुकूल किसी गुरु से भी मिलन नहीं हुआ। फिर मैंने सोच लिया कि शायद ईश्वर और गुरु दोनों ही मेरे नसीब में नहीं हैं और बहुत उदास रहने लगी।

### गीता का सही अर्थ समझ में आने लगा

एक सत्गुरुवार के दिन पड़ोस में रहने वाली एक बहन निमंत्रण देने आयी कि सामने ही ब्रह्माकुमारीज़ सेंटर है, आज आप प्रसाद लेने के लिए वहाँ आइये। मैं शाम के समय वहाँ गयी। ब्रह्माकुमारी बहन ने ज्ञान की कुछ बातें सुनाईं, प्रसाद दिया और कहा, यहाँ गीता का ज्ञान सुनाया जाता है। मैंने पूछा, क्या गीता अर्थ सहित समझाएंगे? वे बोली, सरल भाषा में अर्थ सहित समझाएंगे और वह भी नि:शुल्क। यह सुनकर बहुत खुशी हुई। अगले दिन से सेंटर पर जाने लगी। पहले दिन आत्मा का पाठ, दूसरे दिन परमात्मा का पाठ मिला। जैसे-जैसे वे समझाते गए, हर बात मेरे सामने स्पष्ट होती गई। बहुत सरल भाषा में बहन जी ने समझाया। मैं घर जाकर गीता खोलकर पढ़ती तो पाती कि वही ज्ञान है। आज तक इतनी बार गीता पढ़ी लेकिन कुछ समझ में नहीं आया। अभी दीदी ने समझाया तो आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, स्पष्ट अनुभव होने लगा। मैंने युगल को यह बात बताई तो कहने लगे, मैं भी कल से चलूँगा। ज्ञान इतना अच्छा लगा कि हम साप्ताहिक कोर्स के दौरान ही पूरे नियम-धारणाओं पर चलने लगे।

### बाबा की प्रखर किरणें मुझ आत्मा में समाने लगीं

दो दिन मुरली सुनने के बाद मेरे मन में संशय आया कि ये तो मुरली में 'बाबा ने कहा, बाबा ने कहा', ऐसे ही कहते हैं। शाम को जब युगल ने

कहा, चलो मुरली सुनने तो मैंने कहा, मैं नहीं जाऊँगी, वे तो अपने बाबा की महिमा सुनाते हैं। वे बोले, आपको नहीं आना तो नहीं आओ, मैं तो मुरली सुनने जा रहा हूँ। वे चले गये। उसके बाद मुझे अंदर से खींच होने लगी और मैं भी सेंटर पर चली गई। मुरली सुनी। मुरली तथा योग के बाद एक माताजी ने कहा, यहाँ हरेक को अनुभव होता है, हम यहाँ डायरेक्ट भगवान के महावाक्य सुनते हैं। इस वाक्य से मेरी आशा जग गयी। दूसरे दिन मुरली सुनने के लिये सेंटर गई और योग में बैठ गई। मैंने बाबा को बोला, हे भगवान, अगर आप ही सत्य भगवान हैं तो मुझे भी अपना अनुभव कराइये, फिर मैं आपका हाथ और साथ कभी नहीं

छोडूंगी, पूरा जीवन आप पर स्वाहा करूँगी। इसके बाद मेरी बुद्धि की रस्सी बाबा ने खींच ली, मुझमें रूहानी शक्ति का प्रवाह आने लगा और मैं अशरीरी हो गई। शरीर से अलग होकर ऊपर से अपने शरीर को देखने लगी। योग में बैठे भाई-बहनों को भी देखने लगी। उस समय मुझे बहुत हलकापन महसूस हो रहा था, खुशी हो रही थी। थोड़े समय बाद बाबा ने मुझे अपने पास परमधाम में खींच लिया। वहाँ लाल-सुनहरे रंग का प्रकाश चारों ओर फैला हुआ था। बाबा की शक्तियों के प्रकंपन चारों ओर फैल रहे थे और मैं बाबा के सम्मुख थी। बाबा ने अपने तेजस्वी बिन्दुरूप का अनुभव कराया। बाबा के प्रकाश की प्रखर किरणें मुझ आत्मा में समा रही थी। उस समय मेरी खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं था। सुख, शान्ति, पवित्रता का अनुभव हो रहा था। खुशी में मन अंदर नाचने लगा था। मैंने बाबा को कहा, बाबा, मैं इतने दिनों से इसी सुख की प्यासी थी, यही मेरे मन की चाहना थी, इसके लिए ही मैं तड़प रही थी, मुझे जो चाहिये था अब मिल गया। ऐसे कहकर मैं बाबा के प्यार में समा गयी। जिसे अतीन्द्रिय सुख कहा जाता है, यह वही था। मैं शब्दों में उसका वर्णन नहीं कर सकती।

**शान्ति और प्रेम का अनोखा अनुभव**

निमित्त बहन ने बताया था कि बाबा शान्ति के सागर हैं, मैं शांत स्वरूप आत्मा हूँ, बाबा प्रेम के सागर हैं, मैं प्रेम स्वरूप आत्मा हूँ – इस प्रकार चिंतन करते रहना है। मैं वही चिंतन करने लगी। इससे बाबा की शान्ति की लाइट की किरणें मुझ आत्मा में समाने लगी। शान्ति का वह अनुभव बहुत अलग था जो कभी इस दुनिया में नहीं किया था। गहन शान्ति थी। फिर मैंने संकल्प किया, बाबा प्रेम के सागर हैं, मैं प्रेम स्वरूप आत्मा हूँ, तो प्रेम का इतना गहरा अनुभव हुआ कि साकार में वह अनुभव कभी नहीं हो सकता। इसी तरह मैं बाबा के एक-एक गुण का, शक्तियों का अनुभव करती गयी और बाबा मुझे उसका गहराई से अनुभव कराते रहे। मैं बाबा के प्यार में समा गयी। बहुत समय तक मैं इसी अनुभव में समाई रही। फिर मैं नीचे शरीर में आने लगी। मैंने क्लास में क्या देखा, जो बहन योग करा रही थी, बाबा से शक्तियों की लाइट-माइट की किरणें फाऊंटेन की तरह उनकी आत्मा में समा रही थीं और उनके मस्तक से और आँखों से निकल कर सभी क्लास में बैठने वालों की आत्मा में समा रही थीं। बहन जी की आत्मा मुझे स्पष्ट अनुभव हो रही थी और सभी क्लास वालों की भी आत्मा स्पष्ट अनुभव हो रही थी।

**अर्जुन बनकर सुनी ज्ञान-मुरली**

फिर योग समाप्त हुआ, सफेद लाइट हुई, तभी मैंने शरीर में प्रवेश किया। मैंने बाबा को दिल से बार-बार शुक्रिया अदा किया और कहा, बाबा, अब मैंने आपको पूरा ही पहचान लिया। उसके बाद पूरा परिवार ही ज्ञान में चलने लगा और एक साल के बाद मधुबन बाबा के घर मिलने मनाने पहुँचे। जिनके लिए मैं इतने दिनों से तड़प रही थी वे मुझे अब सम्मुख मिलेंगे, इसकी बहुत ही खुशी थी। जब बाबा आये तो मैं तो प्यार में समा गई। जब बाबा मुरली सुनाने लगे तो मुझे अनुभव हुआ कि जैसे यादगार है कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता सुनाई, ऐसे ही बाबा मुझ आत्मा को (अर्जुन को) यह ज्ञान की गीता सुना रहे हैं। मैं तो धन्य-धन्य हो गई।

अब तो हमारा पूरा परिवार बाबा का बन गया है। दो बेटियाँ सेंटर पर समर्पित हैं। एक बेटा मधुबन में समर्पित है और हम दोनों भी बाबा की सेवा में रहते हैं। बाबा हर पल, हर घड़ी साथ दे रहे हैं। गुरुओं के भी गुरु सद्गुरु शिवबाबा मिल गये इसलिए अंदर यही गीत गूंजता है – धन्य-धन्य हो गये, हम प्रभु को भा गये। ❖